एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# गेंदे की खेती

(*डॉ. विनय कुमार एवं डॉ. राम भरोसे)
कृषि विज्ञान केन्द्र, श्रावस्ती (आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vinaykmr919@gmail.com

भारत में आम तौर पर गेंदे की खेती सभी जगह पर की जाती है। यह एक सजावटी पौधा है भारत में गेंदा के फूल की जरुरत शादी विवाह धार्मिक ऊत्सव में अधिक रहती है जिससे गेंदे की खेती एक नकदी फसल के तौर पर बढ़ती जा रही है गेंदे की उन्नत खेती खर्च में अधिक मुनाफा कमाये। गेंदा एक सजावटी पौधा होने के कारण यह आम तौर पर सभी घरो में भी पाया जाता है। गेंदे के फूल की मांग बढने के कारण गेंदे की खेती साल के 12 महीने होने लगी है गेंदे की फूल की विशेषता यह भी है की जब किसी महीने में अन्य फूल की खेती नहीं की जाती है तब भी गेंदे के फूल की खेती की जा सकती है गेंदे की दूसरी विशेषता यह है की इसके फूल कई दिनों तक ताजा बने रहते है गेंदे की खेती सभी तरह की भूमि में और सभी तरह के मौसम में की जा सकती है। गेंदे की शुरुआत भारत से हुई है लकिन गेंदे की दोनों मुख्य किस्मे फ्रेंच मैरीगोल्ड और अफ्रीकन मैरीगोल्ड की किस्म भारत में बहुत ही लोकप्रिय है गेंदे की खेती भारत में बहुत से राज्यों में की जाती हैं।

**गेंदे की खेती के लिए भूमि का चुनाव–**गेंदे के फूल को कई प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है, इसे विभिन्न प्रकार की मिट्टी के अनुकूल बनाया जा सकता है। हल्की मिट्टी में गेंदा फूल की खेती के लिए बौना गेंदा सबसे अच्छा होता है, अफ्रीकी (लंबा) गेंदा के लिए समृद्ध, अच्छी जल निकासी वाली, नम मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है। गेंदे की खेती के लिए 5.6 पीएच से 6.5 पीएच वाली रेतीली दोमट मिट्टी सबसे अच्छी होती है।

**भूमि की तैयारी–** मुख्य खेत के लिए भूमि की 2–3 हैरो से अच्छी तरह जुताई करके 20–25 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की खाद मिलाकर मिट्टी में मिला देना चाहिए। गेंदे के पौधे के उत्पादक के लिए आपको मेड़ और खांचे बनाने चाहिए।

**गेंदे की खेती के लिए बीज की मात्रा और बुआई का समय और रोपण का समय**

| मौसम | बीज की मात्रा | बीज बुआई का समय | रोपण का समय |
|---|---|---|---|
| वर्षा ऋतु | 600 से 900 ग्राम | जून | जुलाई |
| सर्दी | 600 से 700 ग्राम | अगस्त | सितम्बर |
| गर्मी | 700 से 800 ग्राम | फरवरी | मार्च |

**गेंदे की उन्नत किस्मे–**

**अफ्रीकन गेंदे की किस्मे** –गेंदे की इस प्रजाति को टेगेट्स भी कहा जाता है। इसके पौधों की ऊंचाई तीन फिट तक पाई जाती है। जबकि इसके फूल की लम्बाई 5 से 7 सेंटीमीटर तक पाई जाती हैं। इसके फूल आकार में बड़े होते हैं। जिनका रंग पीला, नारंगी पीला, सफेद, नारंगी और चमकीला पीला होता है। इस प्रजाति में क्लाइमेक्स, कोलेगेट, क्राउन आफ गोल्ड, क्यूट येलो, जुबली, येलो सुप्रीम, मैमोथ मम, रिवर साइड ब्यूटी और स्पन गोल्ड जैसी और भी कई किस्में पाई जाती हैं। इन्हें व्यापारिक लाभ के लिए सबसे ज्यादा उगाया जाता है।

**फ्रांसीसी गेंदा की किस्मे–** इनको कई जगह फ्रेंच गेंदा के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रजाति के पौधों की लम्बाई एक फिट के आसपास पाई जाती है। लेकिन इसके पौधे में शाखाएं ज्यादा निकलती है। जिन पर फूल भी ज्यादा आते हैं। इसका पौधा कम लम्बाई का होने के बाद भी पूरी तरह फूलों से ढका रहता है। इस प्रजाति में गोल्डन जिम, रेड कोट, डेनटी मैरिएट, रेड हेड, गोल्डन बाल, रेड ब्रैकेट, कपिड येलो, बोलेरो और बटर स्कॉच जैसी कई और किस्में पाई जाती हैं।

**संकर प्रजाति**–इस प्रजाति की किस्मों को संकरण के माध्यम से तैयार किया गया है। इस प्रजाति की नगेट रेट, शेफर्ड, पूसा नारंगी गेंदा और पूसा बसन्ती मुख्य किस्में है।

**खाद् एवं उर्वरक–** गेंदे की खेती में खाद और उर्वरक की बहुत ही अधिक आवश्यकता होती है। जिसमे सड़ी हुई गोबर खाद–250 से 300 कुंतल पर हेक्टेयर, सिंगल सुपर फास्फेट– 800 से 900 किलोग्राम, पोटास– 150 से 200 किलोग्राम तथा  पर हेक्टेयर गोबर की सड़ी हुई खाद सुपर फास्फेट पोटास और यूरिया का 1 तिहाई भाग को खेत तैयार करते समय खेत में अच्छी तरह मिला ले यूरिया का बाकि बचा हिस्सा दो बार फसल लगाने के 30 के लगभग और इसके 20 दिन के बाद दुबारा छिड़क दे।

**गेंदे की नर्सरी तैयार करना–** गेंदे की खेती के लिए सबसे पहले बिज से अलग क्यारी में नुर्सरी तैयार करनी होती है। गेंदे की पौध तैयार करने के लिए पहले क्यारी तैयार करे जिसकी चौड़ाई 1 मीटर और लम्बाई जगह और आवश्य्कता के अनुसार 10 फिट, 20, फिट, 50 फिट आप रख सकते है और क्यारी 10 से 15 सैमी ऊंची होनी चाहिए जिससे पानी क्यारी में रुके नहीं, क्यारी में बीज बुआई के पहले क्यारी को कैप्टॉन और बाविस्टिन 0.2% से उपचारित करे जिससे पौधे में दीमक और फंगस रोग नहीं लगेगा और पौध खराब नहीं होगी क्यारी में नमी कम होने पर ही पानी दे ज्यादा पानी से भी आप की पौध खराब हो सकती है पौधे में पानी की आवश्यकता होने पर ही पानी क्यारी में दें ।

**बीज की बुआई** – बीज की बुआई के लिए अच्छी किस्म के बीज का चुनाव करे बीज की बुआई आप धीरे धीरे करे यह काम आप मशीन से या मजदूरो की सहायता से कर सकते है। बीज की बुवाई करने के बाद हल्की परत मिटटी और खाद की चढ़ा दे और सावधानी पूर्वक सिचाई कर दे क्यारी में बीज को लगाने के पहले आप क्यारी में फंगीसाईड का स्प्रे जरुर करे जिससे नर्सरी में रोग कम लगेंगे और अच्छी नर्सरी मिलेगी।

**बीज की मात्रा–** बीज का अंकुरण 16 से 30 डिग्री तापमान पर 5 से 8 दिन में हो जाता है। बीज की मात्रा अलग अलग किस्मो के आधार पर होती है संकर किस्मो के लिए 700 से 1000 ग्राम पर हेक्टेयर की दर से बीज की आवश्यकता होती है देशी किस्म के बीजो की नर्सरी तैयार करने पर आप को 1000 से 1500 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है आप अपने पसंद के अनुसार बीज का चुनाव कर सकते है।

**बीज बुआई का समय**

| मौसम | बीज बुआई का समय | रोपण का समय |
|---|---|---|
| वर्षा ऋतु | जून | जुलाई |
| सर्दी | सितम्बर | अक्टुम्बर |
| गर्मी | फरवरी | मार्च |

**पौध रोपण–** गेंदे की खेती में अच्छे उत्पादन के लिए की रोपाई समय पर करना जरुरी होती है पौधे के 4 से 5 पत्तिया हो जाने पर यह खेत में लगाने के लिए ठीक रहती है पौधे की रोपाई शाम के समय ही करनी चाहिए और जड़ को अच्छी तरह मिट्टी में दबा दे जिससे जड़ सूखे नहीं हवा में न रहे पौधे लगाने के बाद हल्की सिचाई कर देनी चाहिए पौधे से पौधे की दुरी क्यारी में 30 सेमी (डेढ़ फिट के लगभग रखे) और लाइन से लाइन की दुरी 2 से ढाई फिट के लगभग की रखे अन्य जगह सुविधानुसार

रखे जब आप क्यारी के अलावा पौधे को बेड पर लगाते है तब पौधे से पौधे की दुरी 1 से डेढ़ फिट पर रखे एक ही बेड पर 2 ड्रिप लगाने पर आप लाइन से लाइन की दूरी भी बराबर ही रख सकते है लाइन से लाइन और पोधे से पौधे की दुरी एक रख सकते है।

**सिचाई–** गेंदा 1 साखीय पौधा होता है इसकी वर्दी 45 से 55 दिनों के लगभग होती है। सर्दी में सिचाई 10 से 15 दिन के लगभग और गर्मी में सिचाई 4 से 7 दिन में कर देना अच्छा रहता है जब आप ड्रिप मे गेंदे की खेती करते है तो आप सर्दी में 4 से 6 दिन में और गर्मी में 2 से 3 दिन में इसकी सिचाई कर सकते है गर्मी में आप सिचाई गर्मी के तापमान और जमीन के अनुसार भी कर सकते है गर्मी अधिक होने पर खेत की नमी के अधर पर आप जलधि सिचाई कर सकते है।

**गेंदे में लगने वाले कीट–**

**रेड स्पाइडर माइट –** पौधों पर ये रोग फूल खिलने के टाइम लगता है। जो एक कीट की वजह से फैलता है। इसके लगने पर पत्तियों पर भूरे दाग दिखाई देने लगते है। और फूल भी सुखा हुआ दिखाई देते है। इसकी रोकथाम के लिए पौधों पर डाइकोफाल में गोंद मिलाकर छिड़कना चाहिए।

**माहू–** पौधों पर ये रोग कीटों की वजह से फैलता है। जिससे पौधे पर कुकुम्बर मोजेक और एस्टर यलो वायरस का प्रकोप बढ़ जाता है. इसके लग जाने पर पौधे पर मेलाथियान का छिडकाव करना चाहिए। पौधे को खेत से उखाडकर जला देना चाहिए।

**चेपा कीट–** यह किट भी गेंदा की खेती में बहुत ही नुकसान देय होता है यह किट पोधे की पत्तियों के निचले भाग में और पत्ती के निचे छुपा होता है इसके अधिक प्रभाव में फसल पर बहुत ही नुकसान होता है। इसकी रोकथाम के लिए आप बहुत सी दवाये कम में ले सकते है जो आप को आसानी से बाजार में मिल जाएगी इसकी रोकथाम के लिए आप 30 मब डायमेथोएट का उपयोग कर सकते है जो आप को आसानी से बहुत सी कम्पनी के अंदर आप को मिल जाएगी।

**बीमारिया**

**झुलसा रोग–** पौधे पर ये रोग अल्टरनेरिया टेगेटिका तथा सरकोस्पोरा फफूंद की वजह से लगता है। इसके लगने पर पौधे की पत्तियों पर सफेद धब्बे बनने लगते हैं। जिसके बाद पत्तियां जल जाती है। पौधे पर जब इस रोग के लक्षण दिखाई दे तो ब्लाइटाक्स या वेवस्टीन दवाई की उचित मात्रा का छिडकाव पौधे पर करना चाहिए।

**पौध गलन –** पौधों पर ये रोग शुरूआती अवस्था में लगता है। इसके लगने पर पौधे की जड़ें सड़ने लगती है। जिससे पौधा जल्दी ही मुरझाने लगता और पतीयाँ पीली होकर झड जाती हैं। जिससे पूरा पौधा नष्ट हो जाता हैं। पौधों में ये रोग ज्यादा पानी भराव और फफूंदी की वजह से लगता है। इसके लिए बीज को लगाते वक्त फार्मल्डिहाइट से उपचारित कर लेना चाहिएं या फिर जब पौधे को खेत में लगाये तब कॉपर आक्सीक्लोराइड का छिडकाव पौधों पर करना चाहिएं ।

**कटिंग या पिंचिंग–** गेंदे की खेती में अधिक पैदावार लेने के लिए कुछ विशेष तकनीक का सहारा लेकर आप भी अपने उत्पादन को बड़ा सकते है। इनमे से ही एक यह तकनीक है इस तकनीक में पौधे को 30 से 40 दिन का हो जाने के बाद पौधे को ऊपर से चटका (शीर्ष को काट) देना चाहिए जिससे पौधे की बढ़वार रुक जाएगी और पौधे की अधिक शाखाये निकलने लगेगी जिससे अधिक फूल की पैदावार होगी और अच्छा लाभ हमें मिलेगा।

**फूलो की तुड़ाई–**

- रोपाई के बाद, पौधों में फूल आने में लगभग 40–50 दिन लगते हैं।
- ढीले फूलों को तोड़ा जाता है, वे अपनी किस्म पर पूर्ण आकार प्राप्त करते हैं।
- फूलों की कटाई सुबह के समय की जाती है।
- फूलों की तुड़ाई से सिंचाई करने से फूलों की गुणवत्ता बेहतर होती है।
- नियमित रूप से फूलों की तुड़ाई तथा सूखे एवं खराब फूलों एवं पत्तियों को हटाने से उपज में वृद्धि होती है।
- एक पौधे से लगभग 100 से 150 फूल प्राप्त होते हैं और इसके खिलने की अवधि लगभग 3 महीने होती है।

**फूल का उत्पादन–** गेंदा की खेती में सामान्य उत्पादन जमीन की उर्वरा शक्ति पर निर्भर करता है। और तकनीक का उपयोग करके भी अपने उत्पादन को बड़ा सकते है। जिससे आप को गेंदा की खेति मे अच्छा लाभ मिलने की सम्भावना होती है। सामान्य तोर पर 125 कुंतल पर हेक्टेयर से 150 कुंतल पर हेक्टेयर के लगभग फूलो की खेती में फूलो का उत्पादन हो जाता है अगर आप अच्छी किस्मो का चुनाव करते है और पोधे की अच्छी देखभाल करते हे तो आपको 300 कुंतल तक का उत्पादन फसल समाप्त होने तक मिल जाता है फूलो के उत्पादन के कुछ मुख्य कारण भी होते है जिनमे से कुछ मुख्य कारण हे बीज की किस्म और उवरको का उपयोग, पानी की पूर्ति, फसल की रोगों से बचाव, समय पर दवाओ का उपयोग, मिटटी का चुनाव, खेती में तकनीक का उपयोग ये सभी कारणों का आप सही तरह से धयान रखते है तो आप को फसल में उत्पादन और लाभ दोनों ही अधिक मिलेगा।